आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:19-01-15

अपनी याद से जन्म-जन्मांतर की पाप आत्मा को पुण्य आत्मा बनाने वाले बेहद के पतित-पावन बाप ने कहा, मीठे बच्चे - योग, अग्नि के समान है, जिसमें तुम्हारे पाप जल जाते है, आत्मा सतोप्रधान बन जाती है इसलिए एक बाप की याद में (योग में) रहो.

भक्ति मार्ग में भी हम योग-अग्नि, पतित-पावन, ब्राह्मण और यज्ञ यह सब शब्द सुने हुए थे लेकिन इसका सही अर्थ बाबा ने ज्ञान में समझाया. जब आत्मा, परमात्मा को निरंतर याद करती है तो उसे योग-अग्नि कहा जाता है, जिसे आत्मा में रहे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म हो जाते हैं. वह हठ-योग से तो शरीर ही अच्छा होता हैं, आत्मा तो पतित ही रहती हैं. जब मनुष्य अपने को आत्मा समझ उस परमात्मा को परमधाम में याद करता है तब उस आत्मा के पाप भस्म हो, आत्मा पतित से पावन बन जाती हैं. इसलिए परमात्मा को ही पतित-पावन कहा जाता हैं. भक्ति मार्ग में वह ब्राह्मण यज्ञ रचते है उस यज्ञ से भी आत्मा को कोई फ़ायदा नहीं होता. जब संगमयुग पर परमपिता-परमात्मा शिव स्वयं आकर ज्ञान-रुद्र-यज्ञ रचते है तो उसके लिए सर्व प्रथम ब्रह्मा मुख-वंशावली ब्राह्मण रचते है. इस ब्राह्मणों की मदद से ही अभी वह नई सतोप्रधान सतयुगी दुनिया कि स्थापना करते हैं. फिर उनको ही बाप अपना वर्सा, सतयुगी दुनिया का मालिक भी बनाते हैं.

आज बाबा हमें इस ईश्वरीय ज्ञान की दो मुख्य बातें अल्फ और बे पर समझा रहे है. अल्फ माना बाप को याद करो और बे माना स्वदर्शन चक्रधारी बनो तो तुम एवरहेल्दी और वेल्दी बनेंगे.

बाबा की याद पर कहे गये महा-वाक्यों ---

- बाबा कहते है गृहस्थ व्यवहार में रहते, सब कुछ करते हुए बाप से वर्सा पाने का पुरुषार्थ करना हैं, यह तो बहुत सहज हैं. कामकाज करते भी एक शिवबाबा की याद में रहना है.

- बाबा कहते है भक्ति में तुम ही मुझे पुकारते थे - हे पतित-पावन आओ, आकर हम को पावन बनाओ. तो बाप ही आकर तुम्हें पावन बनाकर पावन दुनिया की राजधानी का मालिक बनाते हैं.

- बाबा कहते हैं मुझे परमधाम में याद करो. परमधाम को भी याद करो, मुझे भी याद करो तो तुम मेरे पास घर चले आयेंगे.

- बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप उतर जायें. अपने को आत्मा समझ बाप से पुरा लव रखना है. देह-अभिमान में नहीं आना है. हाँ, बहार का प्यार भल बच्चों आदि से रखो. परन्तु आत्मा का सच्चा प्यार रुहानी बाप से हो. उनकी याद से ही विकर्म विनाश होंगे. मित्र-सम्बन्धियों, बच्चों आदि को देखते हुए भी बुद्धि बाप की याद में लटकी रहे.

- बाबा कहते हैं अब तुम्हारी मुसाफ़िरी पूरी हुई है. तुम अब मुसाफ़िरी से लौट रहे हो. तो अपना घर कितना प्यारा लगता है. परमधाम है बेहद का घर. वापिस अपने घर जाना है. तो सदा अपने घर और बाप को याद करते रहो.

- बाप समझाते हैं - मीठे बच्चे, अब तुम्हें देही-अभिमानी बनना है. अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसमें है मेहनत. तुम्हारी आत्मा में ही ८४ जन्मो का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है. जो चलता ही रहता है कभी बन्द नहीं होता, यह है कुदरत.

स्वदर्शन चक्र पर कहे गये महा-वाक्यों ---

- बाबा कहते है तुम जानते हो जब पावन आत्मा थे तो उनको रामराज्य कहा जाता था. अभी पतित आत्मायें हैं इसलिए इनको रावण राज्य कहा जाता है. भारत ही पावन, भारत ही पतित बनता है. बाप ही आकर भारत को पावन बनाते हैं. बाकी सब आत्मायें पावन बन शान्तिधाम में चली जाती हैं.

- बाबा कहते है स्वदर्शन चक्रधारी बनने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे. इस समय सब तमोप्रधान और दुखी हैं. सुखधाम में सबको सुख, शान्ति, सम्पति सब मिलता है. सतयुग में एक धर्म होता है. अभी तो देखो घर-घर में अशान्ति है. यह है तमोप्रधान दुनिया, सतयुग है सतोप्रधान दुनिया. बाप संगम पर आया हुआ है. महाभारत लड़ाई भी संगम की ही है. अभी यह दुनिया बदलनी है.

- बाबा कहते है मैं नई दुनिया की स्थापना करने संगम पर आता हूँ. इसको ही पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है. संगम पर ही बाप आकर तुम्हें हीरे जैसा बनाते हैं. हीरे जैसा राजा बन जाते है, फिर सोने जैसी प्रजा बनती है. अभी तुम पावन दुनिया के हकदार बनते हो. इसमें फिर ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ तुमको करना हैं. इस समय का पुरुषार्थ ही तुम्हारा कल्प-कल्प का पुरुषार्थ होगा.

ॐ शांति.